बातचीत पाठ्य पुस्तक के प्रश्न एवं उनके उत्तर

प्रश्न 1. अगर हममें वाशक्ति न होती तो क्या होता?

उत्तर- अगर हममें वाशक्ति न होती तो यह समस्त सृष्टि गूंगी प्रतीत होती। सभी लोग चुपचाप बैठे रहते और हम जो बोलकर एकदूसरे के - दूसरे से -दुख का अनुभव करते हैं वाशक्ति न होने के कारण एक-सुख भी नहीं पाते और न ही अनुभव कर पाते। .सुन-कह

प्रश्न 2. बातचीत के संबंध में वेन जॉनसन और एडीसन के क्या विचार हैं?

उत्तर- बातचीत के संबंध में वेन जॉनसन का मत है कि बोलने से ही मनुष्य के सही रूप का साक्षात्कार होता है। यह बहुत ही उचित जान पड़ता है। एडीसन का मत है कि असल बातचीत सिर्फ दो व्यक्तियों में हो सकती है जिसका तात्पर्य हुआ जब दो आदमी होते हैं तभी अपना दिल एकदूसरे के सामने खोलते हैं। जब तीन हुए तब वह दो बात कोसों-दूर गई। कहा भी है कि छह कानों में पड़ी बात खुल जाती है। दूसरे यह कि किसी तीसरे आदमी के आ जाते ही या तो वे दोनों अपनी बातचीत से निरस्त हो बैठेंगे या उसे निपट मूर्ख अज्ञानी, समझा बना लेंगे। जैसे गरम दूध और ठंडे पानी के दो बर्तन पासआर्ट ऑफ ३ पास असर होगा-कनवरशन बातचीत करने की एकमा काव्यकला प्रवीण मिलता गोल्डेन सीरिज पासपोर्ट सेटा के रखे जाएँ तो एक का असर दूसरे में पहुँच जाता

है अर्थात् दूध ठंडा हो जाता है और पानी गरम। वैसे ही दो आदमी आपस पास बैठे हों तो एक का गुप्त असर दूसरे पर पहुँच जाता है। चाहे एक दूसरे को देखें भी नहीं। तब बोलने को कौन कहे एक के शरीर की विद्युत दूसरे में प्रवेश करने लगती है। जब पास बैठने का इतना असर होता है तब बातचीत में कितना अधिक असर होगा इसे कौन नहीं स्वीकार करेगा।

प्रश्न 3.'आर्ट ऑफ कनवरशेसनक्या है'?

उत्तर-'आर्ट ऑफ कनवरसेशनबातचीत कर'ने की एक कला (प्रविधि) है जो योरप के लोगों में ज्यादा प्रचलित है। इस बातचीत की प्रविधि की पूर्ण शोभा काव्यकला प्रवीण विद्वमंडली में है। ऐसी चतुराई के साथ इसमें प्रसंग छोड़े जाते हैं कि जिन्हें सुन कान को अत्यन्त सुख मिलता है। साथ ही इसका अन्य नाम शुद्ध गोष्ठी है। शुद्ध गोष्ठी की बातचीत को यह तारीफ है कि बात करनेवालों की जानकारी अथवा पंडिताई का अभिमान या कपट कहीं एक बात में ही प्रकट नहीं होता वरन् कर्ण रसाभास पैदा करने वाले शब्दों को बरकते हुए चतुर सयाने अपने बातचीत को सरस रखते हैं। दयनीय स्थिति यह है कि हमारे यहाँ के पंडित आधुनिक शुष्क बातचीत में जिसे शास्त्रार्थ कहते हैं, वैसा रस नहीं घोल सकते। इस प्रकार आर्ट ऑफ कनवरशेसन मनुष्य के द्वारा आपस में बातचीत करने की

उत्तम कला है जिसके द्वारा मनुष्य बातचीत को हमेशा आनंदमय बनाये रखता है।

प्रश्न 4. मनुष्य की बातचीत का उत्तम तरीका क्या हो सकता है? इसके द्वारा वह कैसे अपने लिए सर्वथा नवीन संसार की रचना कर सकता है?

उत्तर- मनुष्य में बातचीत का सबसे उत्तम तरीका उसका आत्मवार्तालाप है। मनुष्य अपने अन्दर ऐसी शक्ति विकसित करे जिसके कारण वह अपने आप से बात कर लिया करे। आत्मवार्तालाप से तात्पर्य क्रोध पर नियंत्रण है जिसके कारण अन्य किसी व्यक्ति को कष्ट न पहुँचे। क्योंकि हमारी भीतरी मनोवृति प्रशिक्षण नएनए रंग दिखाया करती है। वह - हमेशा बदलती रहती है। लेखक बालकृष्ण भट्टजी इस मन को प्रपंचात्मक संसार का एक बड़ा आइना के रूप में देखते हैं जिसमें जैसा चाहो वैसी सूरत देख लेना कोई असंभव बात नहीं। अतः मनुष्य को चाहिए कि मन के चित्त को एकाग्र कर मनोवृत्ति स्थिर कर अपने आप से बातचीत करना सीखें। इससे आत्मचेतना का विकास होगा। उसी वाणी पर नियंत्रण हो जायेगा जिसके कारण दुनिया से किसी से न बैर रहेगा और बिना प्रयास के हम बड़ेबड़े अजेय शत्रु पर भी विजय पा सकते - हैं। यदि ऐसा हुआ तो हम सर्वथा एक नवीन संसार की रचना कर सकते व्यक्ति को :हैं। इससे हमारी वाशक्ति का दमन भी नहीं होगा। अत चाहिए कि अपनी जिह्वा को काबू में रखकर मधुरता से भरी वाणी बोले।

जिससे न किसी से कटुता रहेगी न बैर। इससे दुनिया खूबसूरत हो जायेगी। मनुष्य के बातचीत करने का यही सबसे उत्तम तरीका है।

प्रश्न 5. व्याख्या करें :

(कनए रंग दिखाया करती है। -हमारी भीतरी मनोवृत्ति प्रतिक्षण नए (वह प्रपंचात्मक संसार का एक बड़ा भारी आइना है, जिसमें जैसी चाहो वैसी सूरत देख लेना कोई दुर्घट बात नहीं है।

व्याख्या प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारे पाठ्यपुस्तक दिगंत भाग-2 के महान् विद्वान लेखक बालकृष्ण भट्ट द्वारा रचित शीर्षक ’बातचीत‘ निबन्ध से उद्धृत है। इन पंक्तियों में लेखक ने लिखा है कि जब मनुष्य समाज में रहता है तो समाज से ही भाषा सीखता है। भाषा उसके विचार अभिव्यक्ति का माध्यम बन जाती है। परन्तु उसके अन्दर की मनोवृत्ति स्थिर नहीं रहती है। कहा भी गया है कि चित्त बड़ा चंचल होता है। इसकी चंचलता के कारण एक मनुष्य दूसरे मनुष्य को दोस्त और दुश्मन मान लेता है। वह कभी क्रोध कर बैठता है, कभीकभी मीठी बातें करता है। -इस द्वन्द्व स्थिति में मनुष्य की असली चरित्र का पता नहीं चलता। मनुष्य के मन की स्थिति गिरगिट के रंग बदलने जैसी होती है। इसी स्थिति के कारण लेखक इस मन के प्रपंचों को जड़ मानता है। वह कहता है कि यह आइना के समान है। इस संसर में छलप्रपंच झूठ फरेब सब होते हैं। -इसका सबसे बड़ा कारण मन की चंचलता ही है। विद्वान लेखक इस

दुर्गुण को दूर करने के लिए सलाह भी देता है कि इससे बचने के लिए पर नियंत्रण रखना होगा। अपने चित्त को एकाग्र (मन) अपनी जिह्वा करना होगा। माना कि हमारी जिह्वा स्वच्छन्द चला करती है परन्तु उस पर यदि हमारा नियंत्रण हो गया तो बड़ेबड़े क्रोधादिक अजेय शत्रु को - बिना प्रयास अपने वश में कर लेंगे। अतः हमारी मनोवृत्ति पर नियंत्रण करना होगा जिससे हमें न किसी से वैरझगड़ा शत्रुता होगी और हम - अपने नवीन संसार की रचना करसकेंगे तथा साथ ही बातचीत के माध्यम से जीवन का रस ले सकेंगे।

(खसच है (, जब तक मनुष्य बोलता नहीं तब तक उसका गुणदोष - प्रकट नहीं होता।

उत्तर- व्याख्या-

प्रस्तुत व्याख्येय पंक्तियाँ हमारे पाठ्यपुस्तक दिगत भाग-2 के बालकृष्ण भट्ट रचित निबन्ध से ली गयी ह 'बातचीत' लेखक इस निबन्ध के माध्यम से यह बताना चाहता है कि बातचीत ही एक विशेष तरीका होता है जिसके कारण मनुष्य आपस में प्रेम से बातें कर उसका आनन्द उठाते हैं। परन्तु मनुष्य जब वाचाल हो जाता है अथवा बातचीत के दौरान अपने आप पर काबू नहीं रख पाता है तो वह है 'दोष', परन्तु जब वह बड़ी सजींदगी से सलीके से बातचीत करता है तो वह गुण है। मनुष्य के मूक रहने के कारण उसको चरित्र का कुछ पता नहीं चलता है परन्तु वह जैसे

ही कुछ बोलता है तो उसकी वाणी के माध्यम से गुणदोष प्रकट होने -
लगते हैं। जब दो आदमी साथ बातचीत करते हैं तो दोनोंअपने दिल
एकदूसरे के सामने खोलते हैं। इस खुलेपन में किसी की शिकायत-, किसी
की अच्छाई किसी की बुराई होती है और इससे व्यक्ति का गुणदोष -
प्रकट हो जाता है। वेन जॉनसन इस संदर्भ में कहते हैं कि बोलने से मनुष्य
का साक्षात्कार होता है, उसकी पहचान सामने आती है। यहाँ आदमी की
अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने के लिए खानेफिरने आदि -पीने चलने-
की जरूरत होती है। वहाँ बातचीत की अत्यन्त आवश्यकता है जहाँ कुछ
या धुआँ जमा रहता है। यह बातचीत के जरिए भाप (गंदगी) मवाद
बनकर बाहर निकल पड़ता है। कहने का आशय यह है कि मनुष्य के मन
के अन्दर बहुत भी परतें जमी रहती हैं जिनमें कुछ अच्छी और कुछ बुरी
होती हैं और यह बातचीत के दौरान हमारी जिह्वा से प्रकट हो (विचार)
दोष की पहचान होती है।-बोलने से ही मनुष्य के गुण :जाता है। अत

प्रश्न 6. इस (बातचीत) निबन्ध की क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर- इस निबंध के (बातचीत) माध्यम से विद्वान निबंधकार ने बातचीत
करने के लिए ईश्वर द्वारा दी गई वाक्शक्ति को अनमोल बताया है और
कहा है कि मनुष्य इसी शक्ति के कारण पशुओं से अलग है, बढ़कर है।
बातचीत के विभिन्न तरीके जैसे आर्ट ऑफ कनवरसेशन, हृदय गोष्ठी
आदि के बारे में बताया गया है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति दूसरे

व्यक्ति से उत्तम तरीके से बातचीत करता हुआ उनकस आनन्द ले सकता है। इस निबंध में दो विदेशी निबन्धकारों का एडीसन एवं वेन जॉनसन मत दिया गया है जिसमें एडीसन ने यह कहा है कि जब तक मनुष्य बोलना नहीं बोलता उसके गुणदोष नहीं प्रकट होते। वे-न जॉनसन का मत है कि बोलने से ही मनुष्य के सही रूप का साक्षात्कार होता है। निबंध में यह भी बताया गया है कि मनुष्य को अपने हृदयं पर काबू रखकर बोलना (मन) या बातचीत करनी चाहिए। यदि ऐसा हो तो वह सर्वथा नवीन संसार की ख विषाद नहीं झेलन:रचना कर सकता है। उसे कोई दु ा पड़ेगा। बातचीत मनुष्य को अपनी जिन्दगी मजेदार बनाने का एक जरिया भी है। लोग यदि बातचीत के दौरान चुकीली बात कह दें तो लोग हँसने लगते हैं जिससे प्रच्छन्न सुख भाव का बोध होता है। बातचीत मन बहलाव का माध्यम तो है ही, उत्तम बातचीत मनुष्य के व्यक्तित्व के विकसित करने का एक माध्यम भी है जिसके कारण व्यक्ति लोकप्रिय एवं प्रसिद्ध हो जाता है।

प्रश्न 1. 'रामका क्या अर्थ है 'रमौवल-? इसका वाक्य में प्रयोग करें।

उत्तर- रामरमौवल -चार से अधिक व्यक्तियों की बातचीत राम-रमौवल- -श्याम मोहन और सोहन रेलगाड़ी में राम-राम' कहलाती है।रमौवल कर रहे थे।